Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –7, August - 2011
ISSN:- 2230-7850
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

युवा पिढी को राष्ट्रसंत तुकडोजी का संदेश

प्रा. डॉ.एम. ए. पवार
हिंदी विभाग प्रमुख,श्री. वसंतराव नाईक कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
धारणी जि. अमरावती.

प्रस्तावना :

हम जब गर्व से कहतं हैं कि हम सब भारतीय हैं तब हमें हमारे देश के उन सपूतों की याद आती हैं जिन्होने हँसते–हँसते इस भूमी के लिये बलिदान दिये। स्वतंत्रता संग्राम सभी ने देशभक्ति की मशाल अपने हाथों में ली थी कोई सीधे सामने आकर अंग्रेजो से लड़े तो कोई विविध माध्यमों से देशभक्ति जगा रहे थें। देश का कोना–कोना देशभक्ति के जस्बे से दहक रहा था। जिसमें महाराष्ट्र की भूमी कैसे अच्छूती रहती। महाराष्ट्र की भूमी सपूतों की खान है।यहाँ गाडगे बाबा, राष्ट्रसंत तुकडोजी,तुकाराम, बहिनाबाई आदि विभूतियों ने जन्म लेकर इस भूमि को पावन किया। तुकड़ोजी की राष्ट्रभक्ति सर्वव्यापी है। तुकडोजी जानते थे गांधीजी के सपनों का भारत नवयुक ही बना सकते हैं। नवयुवक भारत का भविष्य, शान और गर्व हैं। यही समझकर तुकड़ोजी उसे सचेत करने की कोशिश करते हैं।

इन्सायिनत का पाठ पढ़ाते हुये कहते हैं कि :–
"इन्सान ही हैं देवता, जो सत्य पथ पर चल गया।
इन्सान ही साधु बने, जब संयमी मन को किया।
इन्सान ही वह पीर है, जो ना करे अन्याय को।
इन्सान वइ इन्सान हैं, जो खोजता सदुपाय को"।[1]

राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज ने उस समय नवयुवकों को देश, समाज एवं समाज में फैल रहे अंधविश्वास के प्रति जागृत किया हैं। उस समय देश को अंग्रजों के आतंक, धर्मांतरण, गरीबी की समस्या ने ग्रस लिया था। उसी समय तुकडोजी ने हाथों में खंजिड़ी लेकर गाँव–गाँव में जाकर नवयुवकों को जागृत किया और संगठन करने का आहवान किया जिसमें सभी जाति, धर्म के लोगों ने भेदभाव भुलाकर केवल एक ही संकल्प करना चाहिए कि देश को अंग्रजों के बंधन से मुक्त करना हैं। इस संदर्भ में तुकडोजी कहते हैं –

"राष्ट्र कार्य का पथ हो एक, उसमें सेवक हो सब नेक।
परस्परों से मिलकर बोले, कैसे संगठन का उल्लेख।
आपस में फूटा–फूटी, निंदा बद्दी दमदाटी।

इससे देश नहीं बढ़ पाये, सुन मेरी पत्थर की रेख"। [2]

उस समय भारतीय युवकों के पास अंग्रेजों के विरुध्द लड़ने के लिये ना दाँवपेंच थे, ना शस्त्र थे केवल गाधिजी का अहिंसा का मार्ग, अनशन और जहाल मतदवायिों का रास्ता था।

ऐसी स्थिती में तुकडोजी किसी भी परिस्थिती में देश को आजाद देखना चाहते थे। इसलिए वे नौजवान, बूढ़े–बुजूर्गो, साधु–संतों तक को समझाते हैं –

"ऐ संत महंतों। जाग उठो क्यों सोये आसन माहि।
सोने का समय नही भाई।"
"झाड़ झडुले बाँम बनेंगे।
पत्थर बनेगी सेना।"

इस प्रकार तुकडोजी ने गुलामी जीवन से आजाद होने के लिये नवयुवकों को प्रेरित किया हैं और यह परिवर्तन नौजवान ही कर सकता हैं जिनसे हमें आशा हैं –

"गंगा ही मुख से बोलता, पर स्नान तो करता नहीं।
व्याख्यान देता सत्य का, पर कुछ भी आचरता नहीं।
कहने से लड्डू क्या बनेगा? मुख में जब गिरता नहीं।
लड़ता नहीं जो साधू वह 'वीर' क्यों बोले कोई।" [3]

भारत को आजादी मिले कई वर्ष बीत चुके हैं। इन वर्षों में इस विकास के साथ–साथ देश के नेता से लेकर जनसामान्य लोगों का जीवन सुरक्षित नहीं हैं।

जिस देश में 'सत्यमेदव जयते' यह ब्रीद वाक्य हैं उसी देश में भ्रष्टाचार, अत्याचार, अनाचार, दुराचार होते हुये नजर आता हैं। यही स्थिति तुकडोजी ने आजादी के पूर्व और आजादी के बाद भी देखी। गांधीजी ने कहा था कि इतने सालों तक गोरे लोगों ने हम पर राज किया अब यह काले लोग हम पर राज करेंगे। अर्थात अब यह देश के हिमायती हम पर राज करेंगे। तुकडोजी पर गांधीजी के विचारों का बहुत प्रभाव था। इसलिए आजादी के बाद नौजवानों को इस परिस्थिति से अवगत कराना अपना कर्तव्य समझते है। आजादी के तुरंत बाद देश को चलाने के लिए तत्कालीन सत्ताधारियों ने कर्जा कर लिया था। तुकडोजी उसके विरुध्द थे। वे नौजवानों को समझाते हैं –

"कितना किया हैं कर्जा तुमने, छात्र क्या नहीं जानते।
भोगा न जाय दुःख फिर जो जानते, पहिचानते।
सब देश बेचों फिर भी कर्जा, हो नही सकता अदा।
यहीं सोचकर उन छात्र का दिल टूटता हैं सर्वदा।" [4]

राष्ट्रसंत तुकडोजी इस धरती पर भू–वैंकुठ लाना चाहते थे। जिसके लिये उन्होंने गाँवों को सुधारना चाहा। तुकडोजी के मतानुसार युवक, शिक्षित होगा तो गाँव सुधरेगा। गाँव सुधरेगा तो प्रदेश, फिर देश, फिर विश्व। इस प्रकार से पूरे विश्व में भू–वैंकुठ आ जायेंगा। इसके लिये तुकडोजी ने 'युवक–युवती' दोनो को समान रुपसे शिक्षित होने का उपदेश दिया हैं। यही सोच तुकडोजी युवकों से कहते हैं–

"आचचे सान–सान बाल। उद्या तरुण कार्यकर्ते होतील।

गावाचा पांग फेडतील। उत्तोत्तम गुणांनी।" [5]

तुकडोजी ने आज की उच्च शिक्षण पध्दती को भी स्वीकार किया हैं। युवक–युवती को उच्च शिक्षित होना चाहिए। साथ–ही–साथ उन्हें हर कार्य में सश्रम होना चाहिये। समय आने पर युवक को घर का हर काम आना चाहिए और युवती को बाहर के। तुकडोजी ने युवती को युवक से श्रेष्ठ माना हैं। उन्होंने युवतियों को संघटित होने को कहा हैं।

अतः'युवा पीढ़ि की शिक्षा सिर्फ किताबों तक सिमित न हो बल्कि उसे श्रम का भी महत्व होना चाहिये। श्रम भी निःस्वार्थ भावना से होना चाहिये। वह स्वार्थ प्रेरित न हो तभी मानव का कल्याण हो पायेंगा। वह आज के पीढ़ि को सक्षम बनाना चाहाते हैं तुकडोजी युवकों को सलाह देते हैं, कि शत्रु का मुकाबला करने के लिये हमें सर्व प्रथम सशक्त बनना पड़ेगा। तभी हम शत्रु पर विजय पा सकते हैं। 'वह लहर की बरखा' में कहते हैं –

"ना हो अनुकूल तब तक,
आझादी को थारा नहीं।"
और जिस देश की युवा पीढ़ि नेक और सच्चाई के मार्गपर चलनेवाली होगी तो निश्चित हमारे दश का भविष्य उज्वल होगा।

1. ग्रामगीतेतील दृष्टांत कथा (1)
2. अमृत कथा भाग – 4
3. अमृत कथा भाग – 5
4. ग्रामगीतेतील दृष्टांत भाग – 2
5. अ–19–जीवन–शिक्षण 177, ग्रामगीता